!! ओ३म् !!

संस्कृत साहित्य, संस्कृति : दशा एवं दिशा

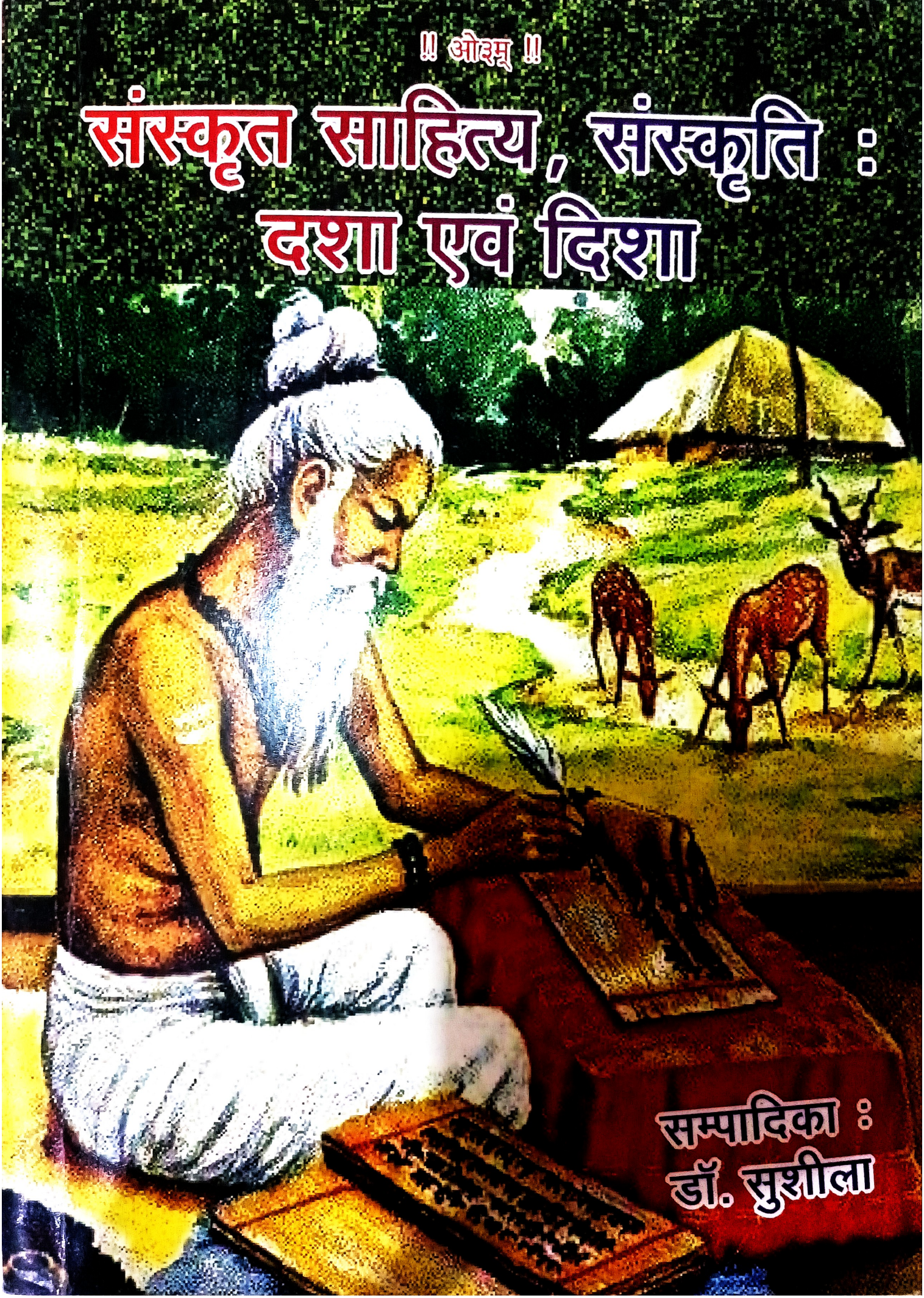

सम्पादिका :
डॉ. सुशीला

Scanned with ACE Scanner

अनुक्रमणिका

		पृष्ठ संख्या
	Message : Dr. Rashmi Bajaj	iii
	पुरोवाक्	v
1.	रीतिकालीन रस शास्त्र पर संस्कृत रस शास्त्र का प्रभाव	1
2.	प्राचीन धर्म ग्रंथ एवं अनामदास का पोथा (स्त्री संदर्भ में)	10
3.	अग्निपुराण में काम्यकर्म : एक विवेचनात्मक अध्ययन	19
4.	भारतीय संस्कृति में 'विवाह संस्कार'	31
5.	रामायण में मानवीय मूल्यों का आदर्श	40
6.	वैदिक साहित्य एवम् पर्यावरण	50
7.	आधुनिक जीवन में संस्कृत साहित्य की उपयोगिता	62
8.	भारतीय संस्कृति में मूल्य व्यवस्था	67
9.	संस्कृत-ग्रन्थों में प्रकृति-प्रेम	74
10.	हिन्दी की क्लिष्टता	80
11.	वाल्मीकि रामायण में मानवीय मूल्यों का समावेश	84
12.	हिन्दी साहित्य पर संस्कृत का प्रभाव	87
13.	संस्कृत ग्रन्थों में प्रकृति-प्रेम	90
14.	आधुनिक जीवन में संस्कृत साहित्य की उपयोगिता	94
15.	कालिदास के नाट्य साहित्य में प्रेम चित्रण	101
16.	संस्कृत साहित्य, संस्कृति : दशा एवं दिशा	106
17.	संस्कृत ग्रंथों में वर्णित राजनीतिक मूल्य	111
18.	संस्कृत के आर्ष ग्रन्थों पर आधारित हिन्दी उपन्यासों में वर्ण-व्यवस्था	116
19.	वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भगवत्गीता की प्रासंगिकता	126
20.	लोक साहित्य : दशा एवं दिशा	136
21.	संस्कृत-साहित्य : एक प्राचीन वाङ्मय	143
22.	संस्कृत ग्रंथ एवं स्त्री अस्मिता	149
23.	पाणिनीयव्याकरणे कारकाणां स्वरूपम्	154
24.	आधुनिकहिन्दूदद्वाकविधेः अवधारणा	165
25.	अभिज्ञान शाकुन्तलम् में प्रकृति-प्रेम	191

Scanned with ACE Scanner

रीतिकालीन रस शास्त्र पर संस्कृत रस-शास्त्र का प्रभाव

- डॉ. डिम्पल
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी-विभाग
शांति देवी आर्य महिला कॉलेज, दीनानगर

काव्य में रस का स्थान, शरीर में आत्मा के तुल्य है। जिस प्रकार आत्मा के बिना शरीर की कल्पना संभव नहीं, उसी प्रकार रस के अभाव में काव्य निरर्थक है। रस रीतिकालीन कवियों का प्रिय विषय रहा है। रीतिकालीन काव्य में ऐसी कितनी ही काव्य-रचनाएँ मिलती हैं। जिनमें रस विवेचन हुआ है। कहा जाता है कि पंडितराज जगन्नाथ के पश्चात् यह संस्कृत काव्यशास्त्रीय धारा क्षीण होने लगी तो हिन्दी साहित्य के रीतिकालीन आचार्यों कवियों ने इस पर सैद्धान्तिक दृष्टि से विचार करना आरंभ कर दिया। परिणामस्वरूप रस पर विवेचन होने लगा। इसे ग्रहण करना आरम्भ कर दिया। रस शब्द रस् धातु और अच् प्रत्यय से निष्पन्न है, जिसका अर्थ है स्वाद। संस्कृत में रस शब्द की व्युत्पत्ति 'रस्यते इति रसः' इस प्रकार दी गई है अर्थात् जिससे आस्वाद मिले वहीं रस है।'[1] संस्कृत आचार्य भरत मुनि 'नाट्यशास्त्र' में कहते है कि- विभावनुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रस निष्पत्तिः'[2] विभाव, अनुभाव तथा संचारी भावों के संयोग से रस निष्पन्न होता है।

रस-सम्प्रदाय के प्रथम आचार्य भरतमुनि माने जाते हैं। आचार्य भरत के रस संबंधी दृष्टिकोण पर चार आचार्यों लोल्लट, शंकुक, भट्टनायक और अभिनवगुप्त ने व्याख्या की। तत्पश्चात् मम्मट, विश्वनाथ, राज जगन्नाथ ने अपने-अपने मतानुसार रस का विवेचन किया और रस का संबंध सहृदय से जोड़ा। भामह (5वीं-6वीं शताब्दी) स्पष्ट रूप से रस विरोधी आचार्य नहीं हैं, फिर भी उन्होंने इसे महाकाव्य के लिए अनिवार्य तत्त्व माना है। दंडी (6-7 श. ई.) ने रस का विवेचन अलंकार प्रकारण में किया है, पर वामन (8वीं श. ई.) ने गुण-प्रकरण में। रुद्रट (100 से 1100 ई.) ने शांत रस जोड़ कर उनकी संख्या नौ तक पहुँचा दी। आनंदवर्धन (840-870 ई. के बीच) ने

Scanned with ACE Scanner

ਹਿੰਦ ਦੀ ਚਾਦਰ

ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਤੇਗ ਬਹਾਦਰ ਜੀ

ਪੰਡਿਤ ਮੋਹਨ ਲਾਲ ਐਸ. ਡੀ. ਕਾਲਜ ਫਾਰ ਵੂਮੈਨ

ਗੁਰਦਾਸਪੁਰ (ਪੰਜਾਬ) ਫੋਨ : 01874-502681, 242953

Scanned with ACE Scanner

14. ਮਹਲਾ ੯ ਵਾਂ ਬਾਣੀ ਦਾ ਸਰਬਪੱਖੀ ਅਧਿਐਨ
ਪ੍ਰੋ. ਰਮਨਦੀਪ ਕੌਰ 117
15. ਆਦਰਸ਼ਕ ਮਨੁੱਖ ਦੇ ਉਸਰੱਈਏ: ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਤੇਗ ਬਹਾਦਰ ਜੀ
ਡਾ. ਹਰਮੀਤ ਕੌਰ 121
16. Guru Teg Bahadur as The Angel of Humanity
Dr. Dinesh Sharma 126
17. ਹਿੰਦ ਦੀ ਚਾਦਰ : ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਤੇਗ਼ ਬਹਾਦਰ ਜੀ
ਹਰਕਮਲ ਕੌਰ 132
18. Guru Teg Bahadur's Bani: Spiritual and Ethical Teaching
Mrs. Sandeep Kaur Goraya 138
19. ਗੁਰੂ ਤੇਗ ਬਹਾਦਰ ਬਾਣੀ : ਵੈਰਾਗ ਅਵਸਥਾ
ਡਾ. ਰਾਜਵਿੰਦਰ ਕੌਰ 143
20. ਗੁਰੁ ਤੇਗ ਬਹਾਦਰ ਜੀ ਦੀ ਬਾਣੀ ਵਿੱਚ ਨਾਸ਼ਮਾਨਤਾ ਦਾ ਸੰਕਲਪ
ਮਿਸਿਜ਼ ਕਮਲੇਸ਼ ਕੁਮਾਰੀ 150
21. ਗੁਰੂ ਤੇਗ ਬਹਾਦਰ ਜੀ ਦੀ ਬਾਣੀ ਵਿੱਚ ਮਨ ਦਾ ਸੰਕਲਪ
ਡਾ. ਹਰਵੰਤ ਕੌਰ 156
22. ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਤੇਗ ਬਹਾਦਰ: ਬਾਣੀ ਅਤੇ ਸ਼ਹਾਦਤ ਦਾ ਮਹੱਤਵ
ਵੀਰਤਾ 163
23. Teachings of Guru Teg Bahadur Ji and Education
Ms. Rajbir Kaur 169
24. ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਤੇਗ ਬਹਾਦਰ ਜੀ: ਸੰਪੂਰਣ ਜੀਵਨ
ਪ੍ਰੋ. ਗੁਰਪਿੰਦਰ ਕੌਰ ਰਿਆੜ 175
25. Holistic Vision of Guru Teg Bahadur Ji
Kuljinder Kaur 183
26. ਲਾਸਾਨੀ ਸ਼ਹੀਦੀ
ਸੁਮਨਪ੍ਰੀਤ ਕੌਰ 185
27. ਹਿੰਦ ਦੀ ਚਾਦਰ ਗੁਰੂ ਤੇਗ ਬਹਾਦਰ
ਸ੍ਰੀ ਮਤੀ ਰਾਜਦੀਪ ਕੌਰ 191
28. श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणीः भारतीय संस्कृति की अनमोल धरोहर
पुनीता सहगल 194
29. युग-पुरूष गुरू तेग बहादुर
डॉ. पवन कुमार शर्मा 198
30. गुरु तेग बहादुर जी की वाणी में दार्शनिक चिंतन
डॉ. डिंपल शर्मा 201

Scanned with ACE Scanner

गुरु तेग बहादुर जी की वाणी में दार्शनिक चिंतन

* डॉ. डिंपल शर्मा

भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का गौरवपूर्ण इतिहास है। हमारी संस्कृति वसुधैव कुटुंबकम की रही है। संपूर्ण विश्व को एक परिवार के रूप में देखने का प्रयास भारतीय संस्कृति में प्रारंभ से ही होता रहा है। भारतीय समाज को कई बार बाहरी आक्रमणों का सामना करना पड़ा। हिंदी साहित्य का प्रारंभिक काल जिसे 'आदिकाल' के नाम से अभिहित किया जाता है, उसे संघर्ष का काल कहा जाता है। मोहम्मद गजनबी से लेकर मोहम्मद गौरी ने भारतीय संस्कृति को नष्ट करने के लिए मंदिरों को तोड़ने और लूटने का कार्य किया इस कार्य ने भारतीय समाज को आतंकित किया। भक्ति काल के आरंभ से ही हमारा समाज पूर्णता बंट चुका था। भारतीय राजाओं ने विदेशी शासकों की अधीनता को स्वीकार कर लिया। विदेशी शासन के हस्तक्षेप के कारण भारतीय सभ्यता और संस्कृति के विकास में ठहराव आना स्वाभाविक था। हिंदी साहित्य का मध्यकाल यहां एक ओर नैतिक पतन का काल था वहीं दूसरी ओर संत साहित्य की दृष्टि से अत्यंत समृद्धि काल भी था। संतों ने अज्ञानता के अंधकार में डूबते हुए मानव को नया प्रकाश दिखाया। संतों की वाणी ने जनमानस के लिए संजीवनी का काम किया। इसीलिए इस काल को हिंदी साहित्य का 'स्वर्ण युग' कहा जाता है। इसी काल में अनेक संत भारतीय भूमि पर अवतरित हुए और अपनी अमूल्य वाणी और दिव्य वाणी से हिंदी साहित्य को समृद्ध किया और लोक कल्याण का महत्वपूर्ण कार्य भी किया। उत्तर भारत के भक्त कवियों में कबीर दास, सूरदास, तुलसीदास, सुंदरदास, रैदास, रज्जब, बाबा फरीद, दादू दयाल, मीरा, रसखान, रहीम, गुरु नानक देव आदि का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है। संत

* सहायक प्रोफेसर, हिन्दी, शांति देवी आर्य महिला कॉलेज, दीनानगर

Scanned with ACE Scanner

!! ओ३म् !!

साहित्य और अनुवाद प्रक्रिया

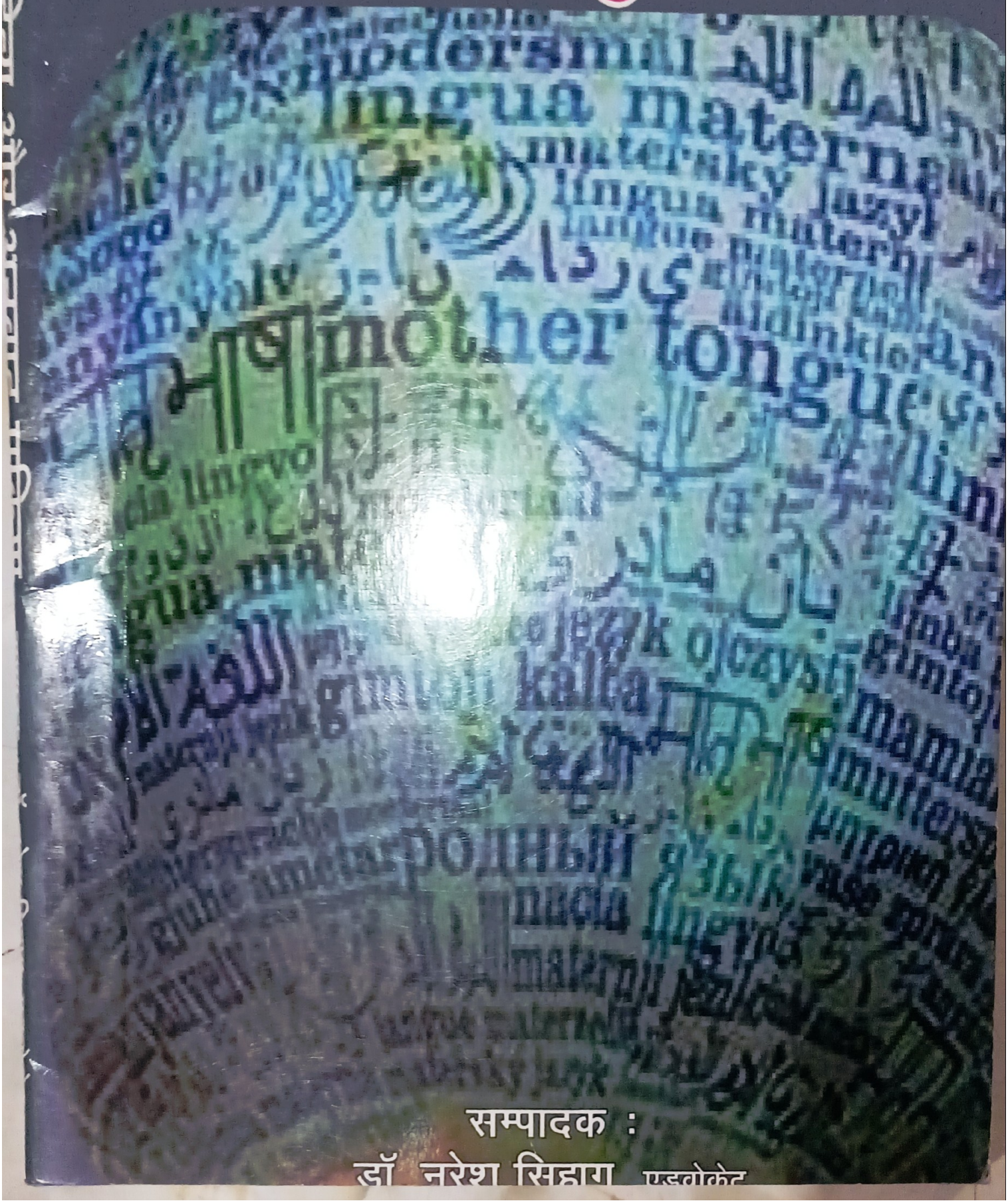

सम्पादक :

डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट

Scanned with ACE Scanner

अनुक्रमाणिका.....

1.	भूमिका	सहदेव समर्पित	5–7
2.	आत्म निवेदन	डॉ. नरेश सिहाग	8–8
3.	वर्तमान समय में अनुवाद की उपादेयता	मुदस्सिर अहमद भट्ट	9–12
4.	मध्यकालीन हिंदी साहित्य और अनुवाद	संध्या	13–22
5.	साहित्य एवं अनुवाद प्रक्रिया	डॉ. राखी के. शाह	23–27
6.	संस्कृत साहित्य एवं अनुवाद प्रक्रिया	डॉ० ज्योति सिंह	28–31
7.	हिंदी साहित्य के विकास में अनुवाद की भूमिका	डॉ0 नीलम देवी	32–37
8.	भाषिक अनुवाद एक कठिन कार्य	डॉ. डिम्पल शर्मा	38–46
9.	Literature and Rules of Translation	Ms. Jyoti Boora	47-51
10.	पत्रकारिता में अनुवाद	डॉ. नरेश सिहाग	52–55
11.	भाषा, व्याकरण और अनुवाद	श्यामवीर	56–58
12.	तेलुगू का 'हिन्दी कथा संग्रहम् अनुवाद एवं आलोचन	डॉ. पवन कुमारी	59–64
13.	अनुवाद का स्वरूप एवं उसकी प्रक्रिया	डॉ.मौ. रहीश अली खां	65–68
14.	हिन्दी के आधुनिकीकरण और वैश्वीकरण में		
15.	अनुवाद की भूमिका	डा॰ हरदीप कौर	69–72
16.	तुलनात्मक साहित्य अध्ययन और अनुवाद	हरपाल ग्रोवर	73–76
17.	अनुवाद : क्षेत्र एवं प्रकार	डॉ. अंजु	77–82
18.	Translation in Context of Indian Literatue	Kamlesh	83–88
19.	CHALLENGE OF CULTURE SPECIFIC TRANSLATION OF RASHMI BAJAJ'S POETRY	Sarita Goyal	89–96
20.	मौलिक लेखन का पुनःसृजन : अनुवाद	यशपाल सिंह	97–10
21.	साहित्य और अनुवाद प्रक्रिया	डॉ. अंजना सैनी	101–1
22.	अनुवादक और अनुवाद का महत्त्व	डॉ. सुशीला	104–1
23.	अनुवादक प्रक्रिया : मानव बनाम मशीन	डॉ. एन. जयश्री	108–1
24.	अनुवाद अर्थ परिभाषा : स्वरूप	सत्यप्रकाश	111–1
25.	अनुवाद की आवश्यकता	डॉ. जी. मौलाली	114–1
26.	व्यावसायिक स्तर पर अनुवाद की उपयोगिता	डॉ. मोनिका देवी	117–1
27.	व्यवसाय के क्षेत्र में अनुवाद की उपयोगिता	डॉ. सरिता देवी	120–1
28.	साहित्य और अनुवाद	डॉ. रेखा सोनी	122–1
29.	हिन्दी भाषा अनुवाद एवं समस्याएँ	प्रो. रेखा रानी,	125–1
30.	अनुवाद कला	सुमन रानी	129–1

Scanned with ACE Scanner

भाषिक अनुवाद एक कठिन कार्य

–डॉ. डिम्पल शर्मा

किसी एक भाषा में व्यक्त विचारों को जब दूसरी भाषा में उसी रूप में प्रस्तुत किया जाता है, तब वह प्रस्तुतिकरण अनुवाद की प्रकिया के अंतर्गत आता है। मूल पाठ की भाषा स्रोत भाषा कहलाती है और जिस भाषा में मूल पाठ का अनुवाद किया जाता है वह लक्ष्य भाषा कहलाती है। जैसे– मुंशी प्रेमचंद की कहानी 'कफन' का अंग्रेजी भाषा में The Shroud' के नाम से अनुवाद किया गया है तो वहां 'कफन' स्रोत भाषा है और The Shroud' लक्ष्य भाषा है।

टैक्नोलॉजी ने आज विश्व को ग्राम बना दिया है। इसके पीछे सबसे बड़ा कारण अनुवाद एवं अनुवादक है क्योंकि आज प्रत्येक क्षेत्र के विषय से संबंधित ज्ञान प्रत्येक भाषा में उपलब्ध हो रहा है। चाहे वह धार्मिक ग्रंथ हो, व्याकरणिक ग्रंथ हो, आयुर्वेद के ग्रंथ हो, ज्ञान–विज्ञान के ग्रंथ हो, साहित्य हो यां बैंक, रेलवे, हवाई मार्ग आदि न जाने कितने क्षेत्र आज अनुवाद ने अपने अंदर समेट लिये हैं। अनुवाद के माध्यम से ही एक देश की प्रगति का ज्ञान दूसरें देशों तक पहुँच जाता है। आज कोई भी प्रगति दूसरें देशों से अलग होकर प्राप्त करना संभव नहीं बल्कि असंभव है। अनुवाद के द्वारा ही एक साथ सभी को लाभांवित किया जा सकता है। आज सहस्रों भाषाओं में ज्ञानवर्धक सामग्री प्राप्त करने के लिए अनुवाद का सहारा ले कर अपने आप को अद्यावधिक किया जा सकता है। किसी भी व्यक्ति के द्वारा सभी भाषाओं का ज्ञान प्राप्त करना असंभव है। इस असंभव कार्य को अनुवाद के माध्यम से संभव बनाया जा सकता है। साहित्य के क्षेत्र में अनुवाद का अपना ही महत्त्व है। धर्म, विज्ञान और टैक्नोलॉजी विषयों का अनुवाद भले ही सरल कार्य हो परन्तु काव्यानुवाद तथा साहित्य की अन्य विधाओं का अनुवाद सरल काम नहीं है। विज्ञान से संबंधित अनुवाद के लिए तो सघंनक के माध्यम से इंटरनेट पर आँख झपक कर सामग्री को लक्ष्य भाषा में प्राप्त किया जा सकता है। लेकिन साहित्यिक

Scanned with ACE Scanner

प्रयोजनमूलक हिन्दी

नये आयाम

सम्पादिका : डॉ. नीलम देवी

Scanned with ACE Scanner

14. हिन्दी में पत्रकारिता 82
डॉ. नीरा गर्ग
15. वर्तमान में हिन्दी की प्रयोजनीयता 86
डॉ. संजीव कुमार विश्वकर्मा
16. हिंदी और रोजगार : भविष्य की दिशाएँ वाया शोध, दिशा एवं प्रवृत्तियां 92
तेजस पूनिया
17. प्रयोजनमूलक हिंदी के विविध आयाम में विज्ञापन क्षेत्र तथा हिंदी 100
देविका
18. कम्प्यूटर और हिन्दी 108
कविता
19. प्रयोजनमूलक हिंदी : स्वरूप और उपादेयता 111
मीनाक्षी
20. वैश्विक स्तर पर हिंदी की दिशा और दशा 115
अंकित कुंवर
21. हिन्दी भाषा की चुनौतियां एवं विस्तार 119
डॉ. डिम्पल
22. विश्व पटल पर हिंदी की बढ़ती लोकप्रियता 126
लक्ष्मी प्रसाद कर्श
23. संविधान में हिंदी का स्थान 132
डॉ. राकेश कुमार
24. प्रयोजन मूलक हिंदी और अनुवाद 138
डॉ. अंजना सैनी
25. विश्व बाजार में विज्ञापन और हिंदी 143
संतोष
26. प्रयोजनमूलक हिंदी की उपादेयता एवं महत्व 146
डॉ. चित्रा देवगन
27. कंप्यूटर और हिंदी 149
डॉ. एस कल्याणी
28. पारिभाषिक शब्दावली व प्रयोजनमूलक हिंदी का अशेष वैभव 154
डॉ. चन्द्रकुमार जैन

Scanned with ACE Scanner

21

हिन्दी भाषा की चुनौतियां एवं विस्तार

डॉ. डिम्पल
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी-विभाग
शांति देवी आर्य महिला कॉलेज, दीनानगर

परिपक्व जीवन यापन के लिए भाषा का योगदान होता है। भाषा के बिना मानव जीवन पशु तुल्य होता है। पशु जीवन से अलग गौरवशाली जीवन दर्शन भाषा के माध्यम से ही प्राप्त होता है। मानव के मस्तिष्क में क्या गुंजलदार पहेलियां हैं इसका समाधान मानव अपने विचारों का प्रकटीकरण करने के लिए मौखिक भाषा एवं लिखित भाषा के रूप में करता है। हमारी राष्ट्रीय भाषा हिन्दी महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। हिन्दी भारत के बाहर बर्मा, लंका, मारीशस, फीजी, मलाया, दक्षिण और पूर्वी-अफ्रीका आदि में भी बोली जाती है। भारत के महान दार्शनिकों और संतों ने हिन्दी को जन-जन तक पहुँचाया। इनमें वल्लभाचार्य, रामानंद, विट्ठल आदि प्रमुख हैं। राष्ट्र के लिए यह गंभीर शोक की बात है कि हिन्दी राष्ट्र की राष्ट्रीय भाषा है इसके बावजूद हिन्दी को यह सम्मान नहीं मिल रहा जिसके लिए वह हकदार है। आज के इलैक्ट्रोनिक समाज में सब तकनीकी क्षेत्रों में व्यवसाय प्राप्त करने के लिए अंग्रेजी भाषा का चुनाव कर रहा है। बहुत दुख से यह कहना पड़ रहा है कि आज हिन्दी विषय वैकल्पिक विषय की पंक्ति में सांसें ले रहा है। हिन्दी विषय का चुनाव करना सब अपनी लाईफ स्टाईल में पसंद नहीं करते, आठवीं कक्षा के बाद स्कूलों में हिन्दी का चुनाव करना एक प्रश्न चिन्ह पर आकर रुक जाता है। अहिन्दी क्षेत्र राज्य पंजाब में हिन्दी तीसरी भाषा की श्रेणी में आती है। बहुत साफ कहना चाहूंगी कि पंजाब सरकार हिन्दी को पंजाबी राज्य में प्रावधान देना श्रेयस्कर नहीं समझती जिसका जीता जागता उदाहरण पी.एस.टी.ई.टी. होने वाली परीक्षा का प्रावधान है ही नहीं जो हिन्दी पढ़ने वालों को यह सोचने पर मजबूर कर देता है कि क्या हिन्दी भाषा का विषय

Scanned with ACE Scanner

समकालीन साहित्य में नाट्य, काव्य एवं व्यंग्य

संपादक
डॉ. संगीता वर्मा

Scanned with ACE Scanner

13. हिंदी काव्य-साहित्य में निहित जीवन-मूल्य
डॉ. ईश्वरप्रसाद रामप्रसादजी बिदादा 92
14. 'रश्मिरथी' में दीन-दलितों का मसीहा 'कर्ण'
('भारतीय अवधारणा' के विशेष संदर्भ में)
डॉ. डिंपल 98
15. समकालीन साहित्य में धूमिल का व्यंग्य-विधान
डॉ. उपासना 107
16. सुरेंद्र वर्मा का नाट्य साहित्य और आधुनिकता
मेहराज अली 114
17. समकालीन हिंदी-काव्य में डॉ. गोपाल बाबू शर्मा का काव्य-बोध 120
डॉ. राजेश कुमार

Scanned with ACE Scanner

'रश्मिरथी' में दीन-दलितों का मसीहा 'कर्ण'

('भारतीय अवधारणा' के विशेष संदर्भ में)

डॉ. डिंपल
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी-विभाग
शांति देवी आर्य महिला कॉलेज, दीनानगर
Dmplsharma986@gmail.com

भारतीय महाकाव्यों जैसे रामायण और महाभारत में भारत के महिमामय अतीत को वाणी मिली है। इन्हीं के द्वारा आज हम अपने गरिमा-मंडित प्राचीन को देख सकते हैं। इनमें तत्कालीन भारतीय जीवन का सांगोपांग चित्रण एक व्यक्ति का न होकर सार्वभौम का हो गया है। इन महाकाव्यों में जातीय, सांस्कृतिक और साहित्यिक परंपरा की प्राण प्रतिष्ठा है। यही कारण है कि भारतीय हृदय इन ग्रंथों के प्रति अविश्वसनीय नहीं हो पाता और प्रत्येक युग अपनी चिंतनधारा के अनुरूप इन महाकाव्यों से प्रेरणा ग्रहण करता हुआ आगे बढ़ता है। प्रत्येक युग में अनेक कवियों ने इन महाकाव्यों से प्रेरणा ग्रहण करते हुए ग्रंथों की रचना की है। यदि द्विवेदी युग की बात की जाए तो द्विवेदी युग के बाद हिंदी मुक्तक और गीत परंपरा में अनेक उतार-चढ़ाव आए, परंतु प्रबंध-परंपरा प्रायः द्विवेदीयुगीन कलेवर में ही चलती रही। ऐसा कोई प्रबंध काव्य सामने नहीं आया जिसे 'साकेत', 'प्रियप्रवास' तथा 'कामायनी' का विकास माना जा सके। किंतु दिनकर के 'रश्मिरथी' को भी इनका गौरवपूर्ण अवशेष कहा जा सकता है। 'रश्मिरथी' पुनरुत्थान युग में लिखी गई रचना है अतः स्वभावतः कवि का उद्देश्य मानव-धर्म का आख्यान रहा है। महाकाव्य का कलेवर प्राप्त करते हुए भी इस काव्य का संदेश महान है जो मानव को निज की शक्ति का परिचय पाने की प्रेरणा देता है और सद्धर्म के प्रति जागरूक करता है। निश्चय ही भारतीय भाषाओं के प्रबंध काव्यों की परंपरा में 'रश्मिरथी' विशिश्ट स्थान की अधिकारिणी रचना है।

आज जरूरत है बौद्धिक चिंतन की, जो मूल्य है वह है, जो नहीं है वह नहीं है। यदि अहिंसा को मानना है तो तलवार फेंकनी होगी, यदि तलवार को लेना है

Scanned with ACE Scanner

समकालीन हिंदी कविता
एक अंतर्यात्रा

संपादक
डॉ. कृष्ण कुमार

Scanned with ACE Scanner

अनुक्रम

	सम्पादकीय	5
1.	निदा नवाज की कविताओं में कश्मीर का परिवेश **सलमा असलम**	9
2.	समकालीन हिंदी काव्य परंपरा में वीरेन डंगवाल **प्रभाती मुंगराज**	17
3.	समकालीन काव्य में प्रतिबद्धता **डॉ. अनुराग सिंह चौहान**	27
4.	समकालीन कविता की सामाजिकता **डॉ. तनुजा रश्मि**	34
5.	समकालीन कविता का स्वर **मौसमी गोप**	46
6.	समकालीन हिंदी कविता का वर्तमान परिदृश्य **शुभम सिंह**	54
7.	तारसप्तक के कवियों में कुँवर नारायण : शोधपूर्ण विश्लेषण **राज कुमार पांडेय**	62
8.	हिंदी साहित्य में दलित कविता **डॉ. प्रतिभा चौहान**	69
9.	चंद्रकांत देवताले की कविताओं में समकालीन यथार्थ **प्रो. मुकेश भार्गव**	75
10.	समकालीन कविता में सामाजिक यथार्थबोध **प्रियंका भट्ट**	81
11.	कुँवर नारायण के काव्य में नीति-तत्त्वों का अनुशीलन **सतीश कुमार भारद्वाज**	88
12.	हिंदी काव्य-साहित्य में निहित जीवन-मूल्य **डॉ. ईश्वरप्रसाद रामप्रसादजी बिदादा**	97
13.	'रश्मिरथी' में दीन-दलितों का मसीहा 'कर्ण' ('भारतीय अवधारणा' के विशेष संदर्भ में) **डॉ. डिंपल**	103

Scanned with ACE Scanner

'रश्मिरथी' में दीन-दलितों का मसीहा 'कर्ण'

('भारतीय अवधारणा' के विशेष संदर्भ में)

डॉ. डिंपल
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी-विभाग
शांति देवी आर्य महिला कॉलेज, दीनानगर
Dmplsharma986@gmail.com

भारतीय महाकाव्यों जैसे रामायण और महाभारत में भारत के महिमामय अतीत को वाणी मिली है। इन्हीं के द्वारा आज हम अपने गरिमा-मंडित प्राचीन को देख सकते हैं। इनमें तत्कालीन भारतीय जीवन का सांगोपांग चित्रण एक व्यक्ति का न होकर सार्वभौम का हो गया है। इन महाकाव्यों में जातीय, सांस्कृतिक और साहित्यिक परंपरा की प्राण प्रतिष्ठा है। यही कारण है कि भारतीय हृदय इन ग्रंथों के प्रति अविश्वसनीय नहीं हो पाता और प्रत्येक युग अपनी चिंतनधारा के अनुरूप इन महाकाव्यों से प्रेरणा ग्रहण करता हुआ आगे बढ़ता है। प्रत्येक युग में अनेक कवियों ने इन महाकाव्यों से प्रेरणा ग्रहण करते हुए ग्रंथों की रचना की है। यदि द्विवेदी युग की बात की जाए तो द्विवेदी युग के बाद हिंदी मुक्तक और गीत परंपरा में अनेक उतार-चढ़ाव आए, परंतु प्रबंध-परंपरा प्रायः द्विवेदीयुगीन कलेवर में ही चलती रही। ऐसा कोई प्रबंध काव्य सामने नहीं आया जिसे 'साकेत', 'प्रियप्रवास' तथा 'कामायनी' का विकास माना जा सके। किंतु दिनकर के 'रश्मिरथी' को भी इनका गौरवपूर्ण अवशेष कहा जा सकता है। 'रश्मिरथी' पुनरुत्थान युग में लिखी गई रचना है अतः स्वभावतः कवि का उद्देश्य मानव-धर्म का आख्यान रहा है। महाकाव्य का कलेवर प्राप्त करते हुए भी इस काव्य का संदेश महान है जो मानव को निज की शक्ति का परिचय पाने की प्रेरणा देता है और सद्धर्म के प्रति जागरूक करता है। निश्चय ही भारतीय भाषाओं के प्रबंध काव्यों की परंपरा में 'रश्मिरथी' विशिष्ट स्थान की अधिकारिणी रचना है।

आज जरूरत है बौद्धिक चिंतन की, जो मूल्य है वह है, जो नहीं है वह नहीं है। यदि अहिंसा को मानना है तो तलवार फेंकनी होगी, यदि तलवार को लेना है

Scanned with ACE Scanner

मध्यकालीन काव्य और सामाजिक-सांस्कृतिक परिदृश्य

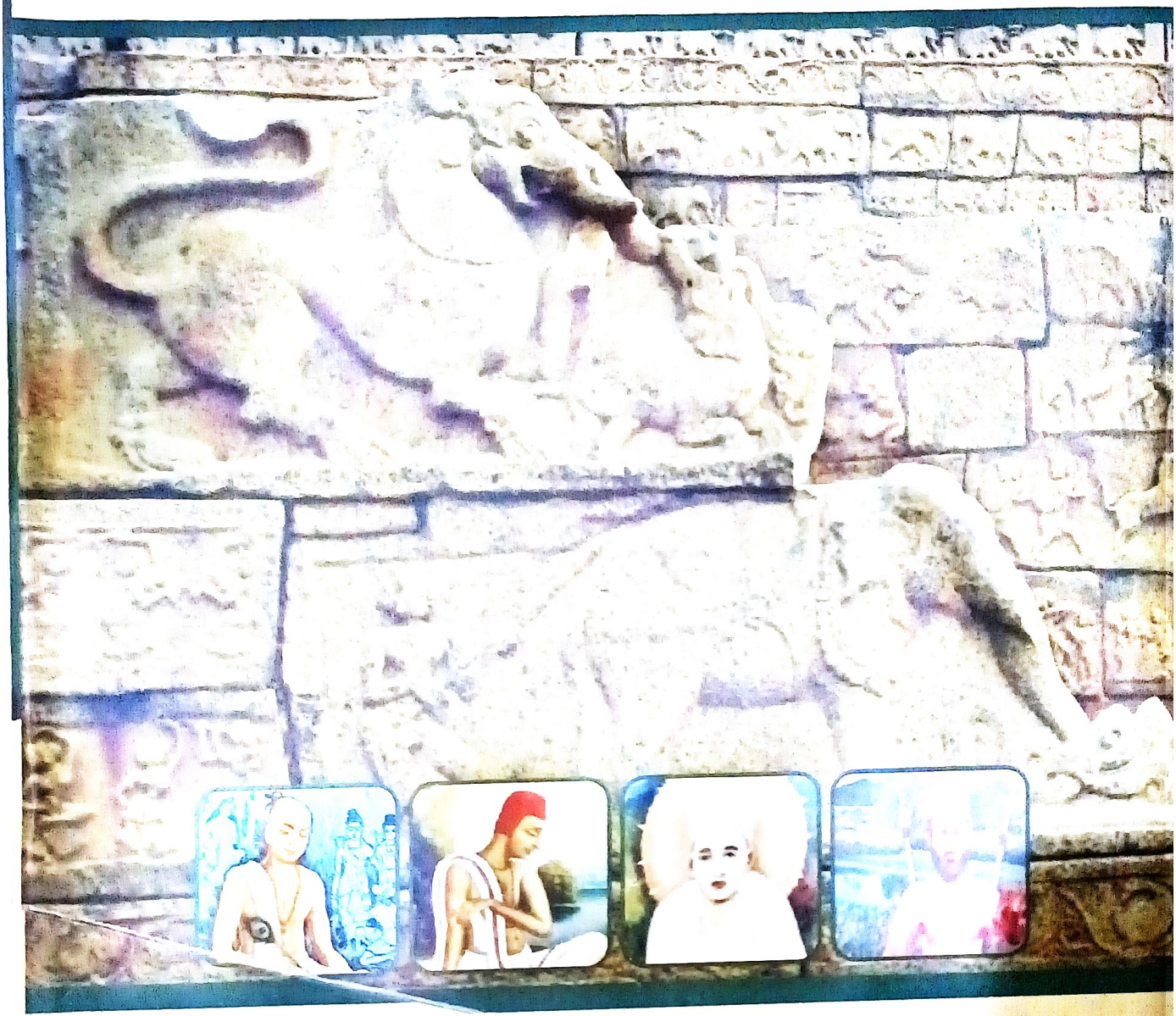

संपादक
डॉ. राजेन्द्र सिंह

Scanned with ACE Scanner

25. सूर-साहित्य में हास्य एवं व्यंग्य 152
प्रमिला देवी

26. सगुण एवं निर्गुण भक्ति का तुलनात्मक अध्ययन 158
श्वेता अग्रवाल

27. वाल्मीकि 'रामायण' और गोस्वामी तुलसी 165
'रामचरितमानस' के कथा-प्रसंगों का तुलनात्मक अध्ययन
डॉ. मधु मालती

28. तुलसी का समन्वयवाद 171
डॉ. सुषमा यादव

29. कबीर वाणी : कल, आज और कल 179
डॉ. राजेंद्र बड़गूजर

30. संत सुंदरदास कृत 'सुंदर विलास' में विविध भाव 190
डॉ. डिंपल

31. कबीर का अभिव्यक्ति पक्ष 199
मीनाक्षी

32. भक्ति-काव्य में स्त्रीवादी चिंतन 205
डॉ. सीमा शर्मा

33. मध्यकालीन काव्य और कबीर की सामाजिकता 209
मोहम्मद माजिद मिया

34. नैतिक पतन से उत्थान की ओर 'रामचरितमानस' 220
दीपिका वर्मा

35. तुलसीदास की समन्वय भावना 226
संजू

36. रीतिकालीन कवियों की सौंदर्य दृष्टि 232
राहुल प्रसाद

37. मध्यकालीन समाज और कबीर 238
उमा सैनी

38. कारीगर कबीर और सामाजिक संरचना 245
डॉ. सत्य प्रकाश पाल

Scanned with ACE Scanner

संत सुंदरदास कृत 'सुंदर विलास' में विविध भाव

डॉ. डिंपल
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिंदी–विभाग
शांति देवी आर्य महिला कॉलेज, दीनानगर
ई–मेल : Dmplsharma986@gmail.com

मध्ययुग में निर्गुण काव्य परंपरा के प्रवर्तक कबीर मानें जाते हैं और उन्हीं के अंतर्गत संत–कवि आते हैं जिन्होंने स्वानुभूत ज्ञान का वर्णन करके हिंदी साहित्य को अमूल्यवान वाणी से सुशोभित किया है। कबीर से पूर्व भी संतों की वाणी मिलती है परंतु कबीर जी की वाणी का जो प्रभाव व्यापक रूप से पड़ा है वैसा अन्य संतों का नहीं पड़ा। इसी कारण संत काव्य परंपरा के प्रमुख संत कबीरदास ही माने जाते हैं। इसी संत–परंपरा में संत सुंदरदास भी हुए हैं। प्रस्तुत लेख में संत सुंदरदास तथा उनकी रचना 'सुंदरविलास' में लोक चेतना पर विवेचन इस प्रकार है।

सुंदरदास प्रसिद्ध संत दादू–दयाल के शिष्य थे। निर्गुण संत–कवियों में से ये सर्वाधिक व्युत्पन्न व्यक्ति थे। इनका जन्म सन् 1596 ई. में जयपुर राज्य की प्राचीन राजधानी द्यौसा नगर में एक खंडेवाल वैश्य परिवार में हुआ। दादू दयाल ने इनके रूप से प्रभावित होकर इनका नाम सुंदर रखा था। दादू के अन्य शिष्य का नाम भी सुंदर था। इसलिए इन्हें छोटे सुंदरदास कहा जाने लगा। किंवदंती के अनुसार इनका जन्म किसी महात्मा के आशीष स्वरूप तथा दादू शिष्य जग्गा के अवतार रूप में हुआ था। 6 वर्ष की आयु में आप दादू के शिष्य हो गए थे। जनश्रुति के अनुसार दादू जिस समय द्यौसा नगर में विराजमान थे उस समय इनके पिता इन्हें लेकर गुरु चरणों में उपस्थित हुए और श्री चरणों में डालकर उन्होंने दीक्षा का

Scanned with ACE Scanner

!! ओ३म् !!

महिला उत्कर्ष एवं बाल विकास : दशा एवं दिशा

डॉ. लता एस. पाटिल
डॉ. नरेश सिहाग
एडवोकेट

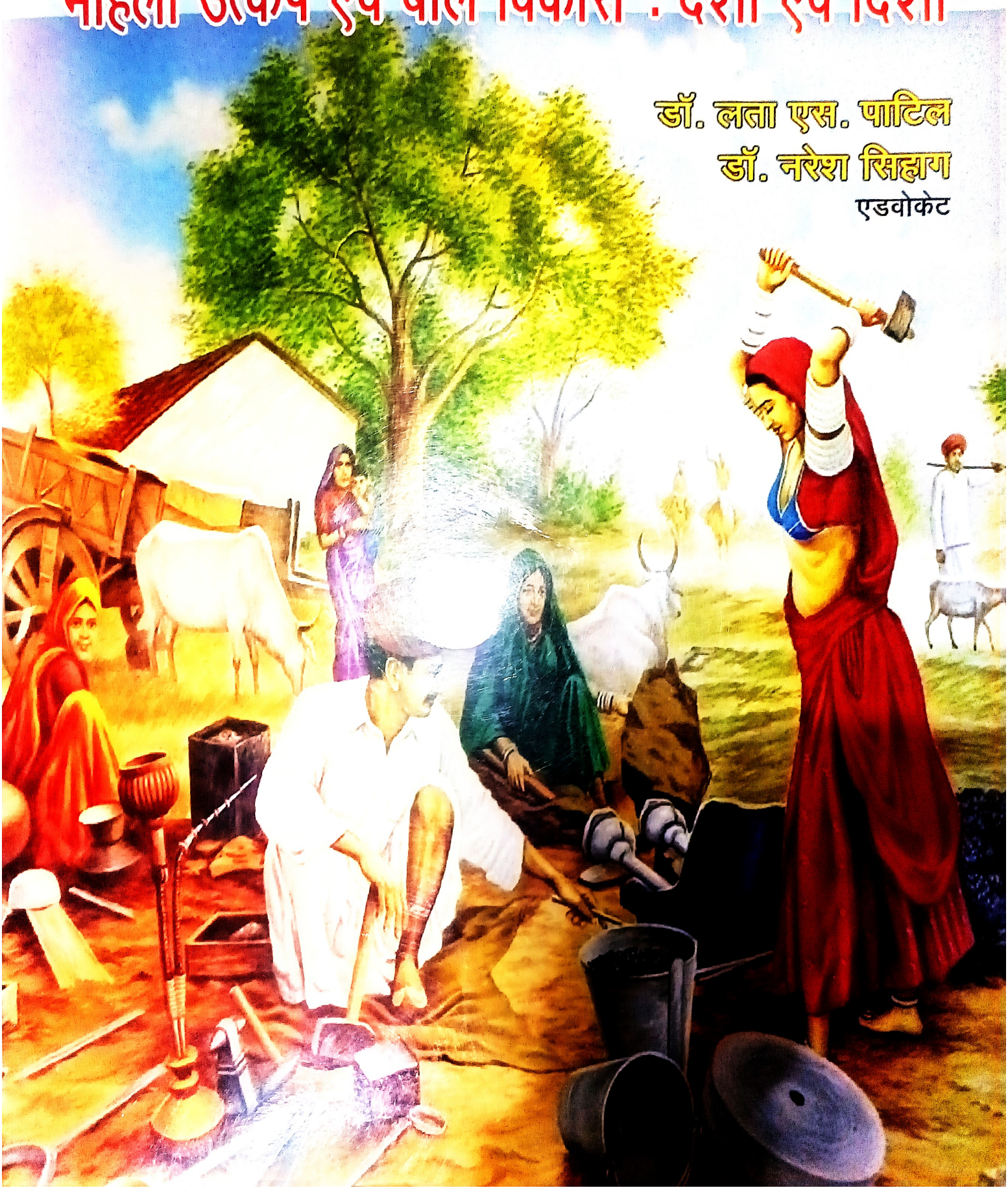

Scanned with ACE Scanner

अनुक्रमाणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	भूमिका	डॉ. संजय एल. मदार	6–7
2.	सम्पादकीय	डॉ. लता एस. पाटिल	8–8
3.	स्त्री कविताओं में अभिव्यक्त स्त्री–मुद्दे	डॉ. रेनू यादव	9–12
4.	लोक साहित्य में महिला चित्रण	यशवन्ती	13–16
5.	महिला उत्कर्ष एवं बाल विकास : दशा एवं दिशा	डॉ. लता एस. पाटिल	17–18
6.	'आपका बंटी' में व्याप्त बाल –मन का विश्लेषण	प्रियंका सिंह	19–21
7.	समकालीन हिन्दी उपन्यासों में महिलाओं की भूमिका	डॉ.षीबा.एम.आर	22–23
8.	लोक साहित्य में नारी	डॉ. सुशीला	24–27
9.	डॉ. कैलाश चन्द शर्मा 'शंकी' के बाल साहित्य में मिथक	डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट	28–30
10.	हिंदी साहित्य में नारी अस्मिता	प्रो. लक्ष्मी प्रसाद कर्ष	31–36
11.	महिला, बाल विषय वस्तु एवं भारतीय सिनेमा	डॉ. रमा राहुल दुधमांडे	37–39
12.	लोक साहित्य में स्त्री जीवन की अभिव्यक्ति	डाकोरे कल्याणी लिंगुराम	40–41
13.	महिला उत्कर्ष के विविध पक्ष	डॉ. मौह. रहीश अली खां	42–44
14.	निराला के काव्य में नारी	पुरषोतम कुमार	45–47
15.	भारत में बाल अधिकार सम्बन्धि संवैधानिक प्रावधान : एक विश्लेषण	डॉ. रीना	48–51
16.	प्रगतिशील समाज में नारी शिक्षा	डॉ. सरिता देवी शुक्ला	52–53
17.	प्रगतिशील समाज में नारी की स्थिति	डा0 सुकेशिनी दीक्षित	54–56
18.	वाल्मीकि रामायण मैं नारी विमर्श	डॉ॰ रेखा	57–61
19.	Trsgedy Under Veils : Poetry of Imtaiz Dharker	Dr.Poonam Wadhwa	62-65
20.	प्रेमचंद के 'गोदान' उपन्यास में चित्रित नारी के विविध रूप	डॉ. नीलम देवी	66–69
21.	इक्कीसवीं सदी में नारी की दशा एवं दिशा	डॉ. डिम्पल	70–75
22.	कौरवी लोक गीतों में स्त्री जीवन	ज्योति देवी, डॉ0 सुधा रानी सिंह	76–80
23.	समकालीन साहित्य में स्त्री विमर्श	संजू	81–82
24.	स्त्री छवि का प्रश्न रूनकारात्मक विरुद्ध सकारात्मक	डॉ० ज्योति सिंह	83–86
25.	Women empowerment with the use of technology	Mrs.Madhu Rani	87-89
26.	बाल साहित्य परम्परा में 'रानी की सराय' : एक चिन्तन	चंचल सिंह	90–91
27.	हर क्षेत्र में आगे हैं महिलाऐ	डॉ0 वसुन्धरा उपाध्याय	92–92

Scanned with ACE Scanner

ISBN : 978-81-93615[illegible]

इक्कीसवीं सदी में नारी की दशा एवं दिशा

आज भारत की स्थिति विश्व में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है और आज वह किसी से दबा हुआ नहीं है। आज तो हमारे सामने दूसरें देश झुकते हैं। 'हम होंगे कामजाब एक दिन' दृढ़ संकल्प हर भारतवासी के मन में गूंजता हुआ यह कह रहा है कि हमारा भारत इक्कीसवीं सदी में कदम रखते–रखते विश्व की महाशक्तियों में अपने लिये स्थानान्तरण कर चुका हैं। आज हम आर्थिक, औद्योगिक एवं सैन्य बल के आधार पर विश्व में अपने कदम टिकाए हुए है। हमने हर क्षेत्र में इतनी तरक्की की है कि हमारे यहाँ सुई जैसी छोटी चीज से लेकर, अंतरिक्षयान जैसी बड़ी चीज का भी निर्माण भारत के अंदर ही हो रहा है। स्पष्ट है कि इक्कीसवीं सदी में हम विश्व में एक महाशक्ति के रूप में उभरने जा रहे हैं।

करीब पच्चीस साल पहले हमारे तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गाँधी ने हमें याद दिलाना शुरू किया था कि भारत बहुत जल्दी इक्कीसवीं सदी में पहुँचने वाला है। हमें इक्कीसवीं सदी में जाना है। यह बात करते–करते हम इक्कीसवीं सदी में पहुँच गए। निश्चिय ही नई सदी में बहुत सारी चीजें काफी चमकदार दिख रहीं है। बीस साल या पचास साल पहले के मुकाबले भारत काफी आगे दिखाई दे रहा है। कई कांतियाँ हो रही है। कम्पयूटर क्रांति चल रही है। मोबाईल कांति भी हो गई है। सबसे बड़ी कांति ईटरनेट कांति हुई जिसने भारत को डिजिटल इंडिया की पंक्ति में ला खड़ा कर दिया। दुनिया में 2007–08 में जो मंदी का झटका आया, वह भी हमें प्रभावित नहीं कर पाया।

वर्तमान में हम इक्कीसवीं सदी में जी रहे हैं, जिस प्रकार उन्नीसवीं सदी को ब्रिटेन का समय कहते हैं, बीसवीं सदी को अमेरिकन सदी कहते हैं, उसी प्रकार इक्कीसवीं सदी भारत की हैं। आइ. बी. ऐम इंस्टिच्यिूट फॉर बिज़नेस वेल्यु की रिर्पोट 'इन्डियन सेंचुरी' के अनुसार : भारत एक तेजी से बदलने वाली अर्थव्यवस्था हैं, आने वालें वर्षों में भारत को सबसे अधिक उन्नति करने वालें देशों में शामिल किया गया हैं।

कमांक	समय	देशों की स्थिति
1.	उन्नीसवीं सदी	ब्रिटेन का स्वर्ण काल
2.	बीसवीं सदी	अमेरिका का विश्व पर बढ़ता प्रभाव
3.	इक्कीसवीं सदी	भारत का समुचित विकास और विकासशील देश से विकसित देशों की गिनती में आने वाला समय।

परन्तु क्या भारत में स्त्री की दशा में सुधार हुआ? यह एक बहुत बड़ा प्रश्न है। परिवार, समाज तथा राष्ट्र के सर्वांगीण विकास में महिला समुदाय की प्रमुख भूमिका रही है, परन्तु इस लक्ष्य तक पहुँचने में उन्हें लम्बा एतिहासिक संघर्ष करना पड़ा वह महिला जो कभी परिस्थितियों का मूक दर्शक हुआ करती थी–सती–प्रथा, पर्दा–प्रथा, बाल–विवाह, विधवा–विवाह, यौन–उत्पीड़न, घरेलू–हिंसा, दहेज–प्रथा, तलाक और बलात्कार जैसी न जाने कितनी ही विसंगतियों का शिकार थी, अनेक आंदोलनों और सुधारों के फलस्वरूप उसके जीवन में आत्म–निर्णय के अधिकार का संचार हुआ, उसने मौन तोड़ा, अपनी निर्यात को बदलने का साहस प्रदर्शित किया।

भारत की संस्कृति और परंपरा दुनिया भर में पुरानी और महान मानी जाती है। भारत दुनिया में सबसे बड़ा लोकतंत्र बनने के लिए भी एक शक्तिशाली और प्रसिद्ध देश है, फिर भी 21 इक्कीसवीं सदी में कदम रखने पर भी महिलाओं के खिलाफ सामाजिक मुद्दों, समस्याओं और बहुत से प्रतिबंधों के कारण, भारतीय समाज में महिलाओं का पिछड़ापन बहुत स्पष्ट है। ऊँच वर्ग के परिवार की महिलाओं के मुकाबले निम्न और मध्य वर्ग की महिलाएं अधिक पीड़ित हैं। भारतीय समाज में महिलाओं को आम तौर पर सेक्स भेदभाव, निरक्षता का उच्च प्रतिशत, महिला शिशु हत्या, दहेज

Scanned with ACE Scanner

होना चाहिए। सभ्यता की सही यात्रा पूरी करने वाला ऐसा नहीं कर सकता।" स्त्री संबंधी समस्याएँ भारतीय समाज के लिए बहुत बड़ी चुनौतियाँ है जिसको दिशा देने के लिए सरकार को ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है। पुरुष समाज को सोचना चाहिए कि–

मृत्यु के लिए बहुत रास्ते हैं
पर जन्म लेने के लिए केवल
स्त्री स्त्री और केवल स्त्री है।

अतः इक्कीसवीं सदी के भारत को सच्चे अर्थों में यदि शक्तिशाली राष्ट्र बनाना है, प्रगति के सशक्त सोपान पर आगे बढ़ना है तो स्त्री के विरूद्ध हो रहे अत्याचारों पर रोक लगानी होगी तो वही भारत की सच्ची तस्वीर होगी, सच्चा रूप होगा। हमें गर्व से कहना चाहिए–

आओ मिलकर भारत को ऐसा देश बनाएँ।
फिर से भारत वासी जगत में ऋषि मुनि गुरु कहलाएँ।

संदर्भ सूची–

1. उत्कर्ष संकल्प (त्रैमासिक पत्रिका), वर्ष–1, अंक–4, जुलाई–15–सितम्बर–15, विजय सिंह–कोख में बेटियों का कत्ल, प्रयाग, पृ–33
2. मधु धवन, अमृतमयी (कविता संग्रह), इलाहाबाद : साहित्य भवन प्रा. लि, प्रथम संस्करण, पृ–29
3. शशि प्रभा, किस कहूँ जीवन कथा (कहानी संग्रह), फैंसला, दिल्लीः अभिषेक प्रकाशन, 2008, पृ–23
4. सोशल साइट से प्राप्त लक्ष्मीकांत चावला के विचार
5. शशि प्रभा, आइनों से झांकते अक्स (कविता संग्रह), चंडीगढ़ : तरलोचन पब्लिकेशन्ज, 2003, पृ–43–44
6. शशि प्रभा, किस कहूँ जीवन कथा (कहानी संग्रह), फैंसला, दिल्लीः अभिषेक प्रकाशन, पृ–66
7. शोध वाणी, (An International Refereed Research Journal), डॉ. राजेन्द्र राही, जनवरी–अप्रैल, जिला–मऊ (उत्तर प्रदेश), पृ–भूमिका

–डॉ. डिम्पल, असिस्टेंट प्रोफेसर
हिन्दी–विभाग
शांति देवी आर्य महिला कॉलेज, दीनानगर

डॉ. डिम्पल, पुत्री श्री कीर्ति लाल शर्मा
मकान नम्बर–186/2 नंगल कोटली गुरदासपुर पंजाब–143521

Scanned with ACE Scanner

विरंजि कुँवरि विरचित
सती विलास

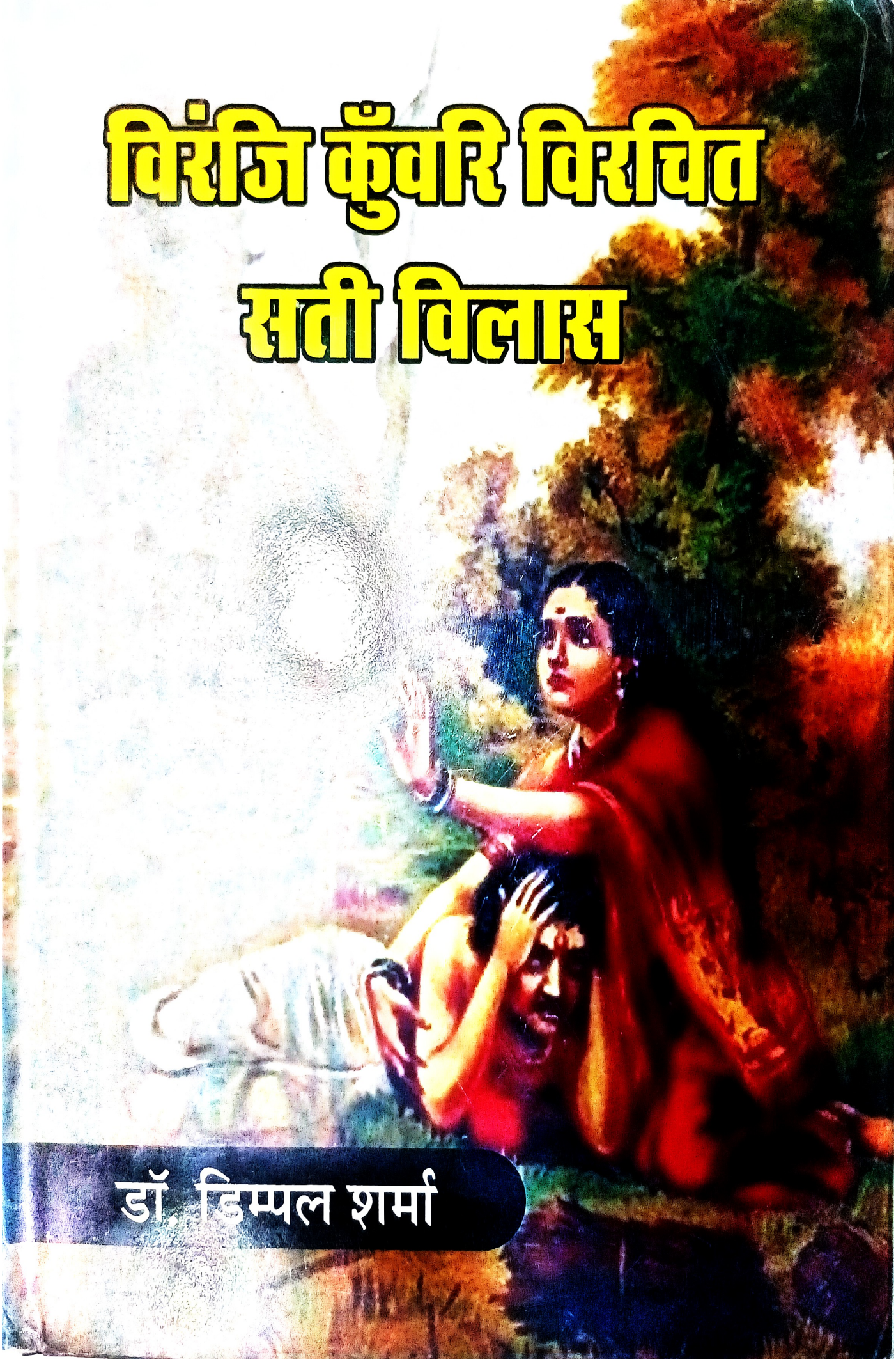

डॉ. डिम्पल शर्मा

Scanned with ACE Scanner

विरंजि कुँवरि विरचित
सती विलास

डॉ. डिम्पल शर्मा

विद्या प्रकाशन
सी, 449, गुजैनी, कानपुर - 22

Scanned with ACE Scanner

निरन्तर आगे बढ़ने की प्रेरणा मिली। मैं अपने ईश्वर तुल्य माता–पिता रचना शर्मा और कीर्ति लाल शर्मा की जीवनभर ऋणी रहूँगी जिन्होंने मुझे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। अपनी गुरु माँ डॉ. सुनीता शर्मा जी का हृदय की गहराई से आभार प्रकट करती हूँ और सदैव आशा करती हूँ कि मुझे उनका आशीर्वाद मिलता रहे। मैं कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ डॉ. सुधा जितेन्द्र, डॉ. सुनील कुमार, डॉ. विनोद कुमार तनेजा, उदय शंकर दूबे, यशोदानंदन शास्त्री का जिन्होंने मुझे निरन्तर आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया।

डॉ. डिम्पल शर्मा
पुत्री. श्री कीर्ति लाल शर्मा
मकान नं. 186/2
नंगल कोटली गुरदासपुर–143521
राज्य–पंजाब

Scanned with ACE Scanner

किसान विमर्श : विविध आयाम

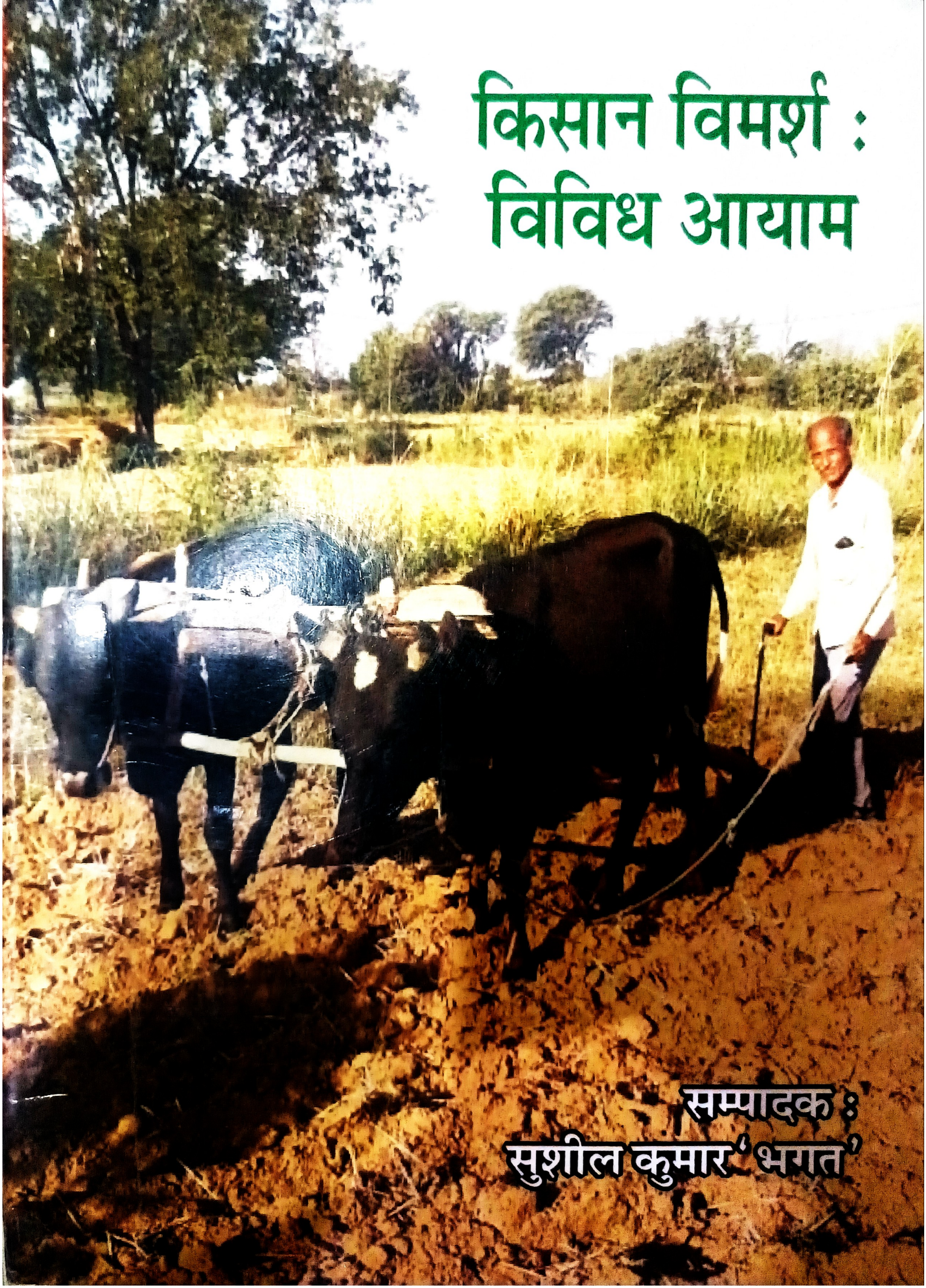

सम्पादक :
सुशील कुमार 'भगत'

Scanned with ACE Scanner

अनुक्रमणिका....

क्र.	आलेख	लेखक	पृष्ठ
1.	सुभाशीष	डॉ. नरेश सिहाग	6–6
2.	सम्पादकीय	सुशील कुमार	7–9
3.	किसान, सरकार और मीडिया	नरेश कुमार	10–13
4.	समकालीन हिन्दी उपन्यासों में कृषि संस्कृति	डॉ. तजिन्दर भाटिया	14–24
5.	हमारे देश में किसानों की स्थिति	डॉ.लता एस.पाटिल	25–26
6.	डॉ. कैलाशचन्द शर्मा 'शंकी' के उपन्यासों में ''किसान विमर्श'' के विविध परिदृश्य	डॉ. नरेश सिहाग	27–31
7.	इक्कीसवीं सदी में किसान	डॉ.विजय कुमार	32–38
8.	भारतीय कृषक और हिन्दी उपन्यास	डॉ॰ अशोक शर्मा	39–44
9.	किसान विमर्श (गोदान के विशेष संदर्भ में)	डॉ. डिम्पल	45–51
10.	कृषक जीवन पर आधारित मार्कण्डेय की कहानियाँ	डॉ0 हिमांगी त्रिपाठी	52–56
11.	किसानों की स्थिति	चन्द्र प्रभा सूद	57–60
12.	किसान जीवन और पंकज सुबीर कृत उपन्यास 'अकाल में उत्सव'	सुरजीत कौर	61–69
13.	वेदों में वर्णित कृषि की आधुनिक उपयोगिता	राहुल शर्मा	70–79
14.	संजीव कृत 'फाँस' उपन्यास में किसान–जीवन की त्रासदी	पूनम पाधा	80–85
15.	वेदों में कृषि की वैज्ञानिक पद्धति	संदीप शर्मा	86–89
16.	हिन्दी साहित्य में किसान विमर्श में विविध स्वर	अमित कुमार गुप्ता	90–93
17.	नई सदी के हिंदी उपन्यासों में किसान	शाज़िया बशीर	94–104
18.	वेदों में कृषि विज्ञान आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य में	गोपाल शर्मा	105–
19.	हिमालय दी करसान ते चरवाह जनजाति गद्दी : इक विमर्श (डोगरी)	सतीश कुमार	110–
20.	करसान–बिजली पानी ते कृषि दा सरबंध (डोगरी)	अणु शर्मा	115–
21.	करसानी च कीटनाशकें उप्पर विमर्श (डोगरी)	कुनाल शर्मा	120–

Scanned with ACE Scanner

किसान विमर्श (गोदान के विशेष संदर्भ में)

–डॉ. डिम्पल

भारत ग्रामीणों का देश है। ग्रामीण क्षेत्र में कृषि का कार्य किसानों द्वारा किया जाता है। भारत को 'कृषि प्रधान देश' की संज्ञा प्राप्त है। यहां लगभग 70 प्रतिशत लोग किसान हैं यहीं कारण है कि किसान को देश की रीढ़ की हड्डी से सम्बोधित किया जाता है। भारतीय किसान दिन रात मेहनत करते हैं फिर भी भारतीय किसान गरीबी की रेखा में आते हैं। 20वीं शती के प्रारम्भ में सामंतवाद के पतन के साथ पूँजीवाद का उदय हुआ। इसने सामाजिक इकाई को टुकड़े–टुकड़े करके विभक्त कर दिया। परिणामतः अमीर और और तथा गरीब और गरीब होते गए। समाज दो वर्गों में विभाजित हो गया– शोषक और शोषित। पश्चिम में मार्क्सवाद के नाम से एक नवीन धारा उठी जिससे मुंशी प्रेमचंद बहुत प्रभावित हुए। प्रेमचंद ग्रामीण जीवन के इतिहासकार थे। इसका मुख्य कारण यह था कि उनका पालन–पोषण गाँव में ही हुआ था। बड़े होने पर भी उनका सम्पर्क गाँवों से बना रहा। इसीलिए ग्रामीणों से स्वभाव, उनकी समस्याओं को इन्होंने जितनी निकटता से परखा उतनी निकटता से शायद ही भारत के किसी लेखक ने परखा हो। यही कारण है कि उनके एक–दो उपन्यासों को छोड़कर शेष सभी उपन्यासों में ग्राम्य जीवन के सुंदर परन्तु यथार्थवादी चित्र मिलते है।

जमींदारों ने किसानों का इतना शोषण किया कि कल तक जो अर्थ व्यवस्था का आधार था पर आज वह परमुखापेक्षी बना दिया गया। धरती पुत्र पर होने वालें जमींदारों के इन अत्याचारों ने प्रेमचंद के हृदय विकम्पित हो उठा। प्रेमचंद ने कृषकों की करुण अवस्था को 'गोदान', 'कर्मभूमि', और 'प्रेमाश्रम' में व्यापक रूप से उपस्थित किया।

औद्योगिक क्रान्ति के साथ साम्राज्यवादी–उपनिवेशवादी शक्तियों का हमला शुरु हुआ था। लॉर्ड विलियम बेंटिक के 1829 का प्रस्वात–जमींदारी प्रथा के कार्यान्वयन सम्बन्धी, और लॉर्ड मैकाले का शिक्षा पद्धति सम्बन्धी प्रस्ताव भी

Scanned with ACE Scanner

विभिन्न परिस्थितियों में जूझती नारी

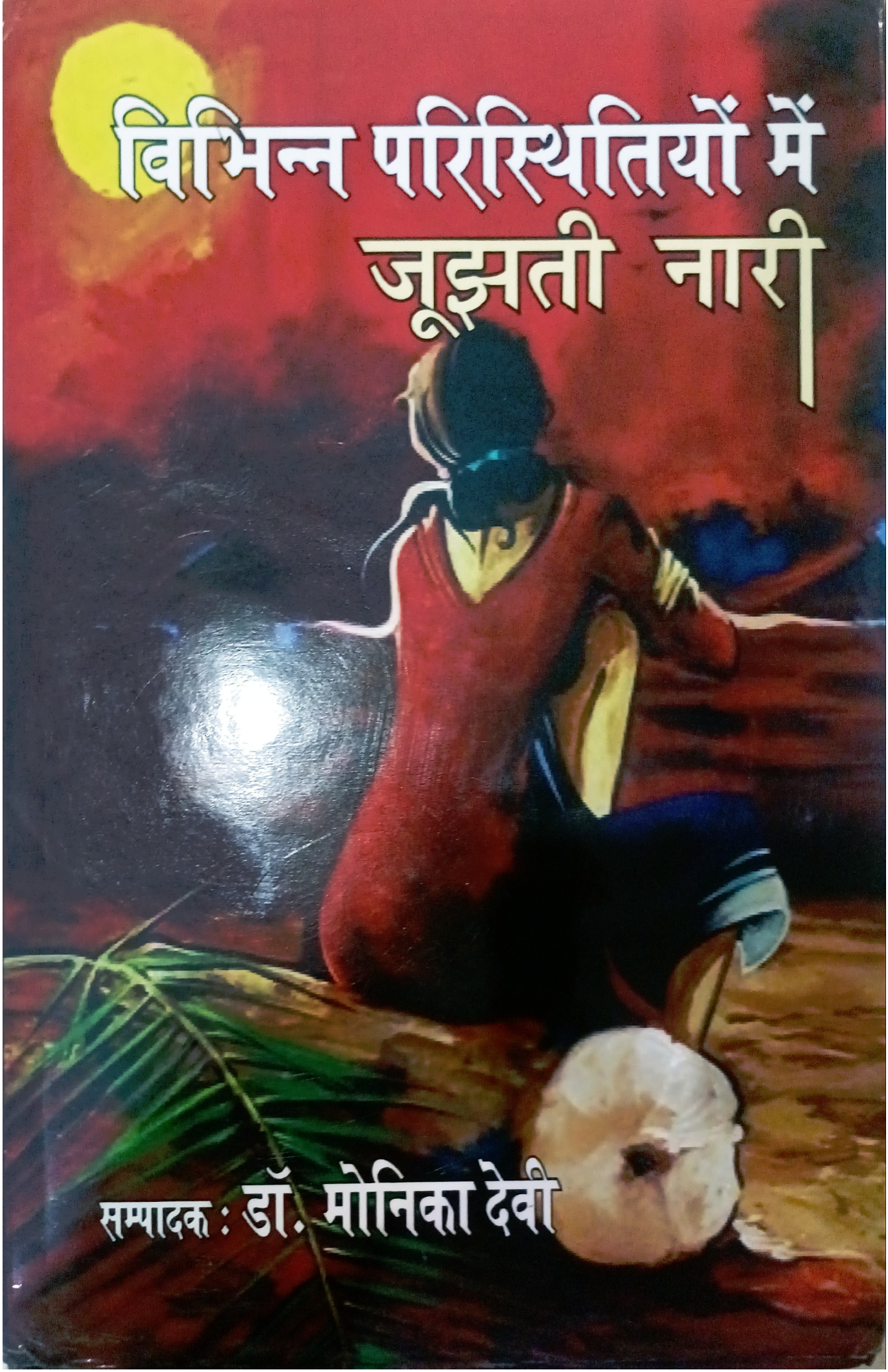

सम्पादक : डॉ. मोनिका देवी

Scanned with ACE Scanner

14. नौकरी पेशा स्त्रियों का जीवन संघर्ष 83
योगिता
15. मारवाड़ी परिवार में स्त्री का दर्द 93
ज्ञानेन्द्र प्रताप सिंह
16. प्रवासी साहित्य में नारी 100
श्रीनिता. पी. आर.
17. स्त्री विमर्श की सांस्कृतिक चुनौतियाँ 104
वीनू
18. हिंदी विज्ञापनों में नारी जीवन कितना सच कितनी मिथ्या 113
डॉ. सोनाली मेहता
19. सोशल मीडिया : महिलायें और उन पर बढ़ता अपराध 115
डॉ. हेमलता मीना
20. रामदरश मिश्र के काव्य में नारी 121
डा. दयाराम
21. भारतीय राजनीति में महिलाओं की भूमिका 127
कल्पना दासरी
22. दिग्भ्रमित होता आज का बचपन.... जिम्मेदार कौन? 131
संध्या मेनन
23. नारी के विविध रूप 134
डॉ. डिम्पल
24. संत्रास से जूझती प्रवासी आत्माएँ 143
स्मिता. एस
25. वेश्याओं के प्रति समाज का दृष्टिकोण 147
बिंदिता नायक
26. दक्षिण भारत में दासी–प्रथा की भुक्तभोगी नारी समाज 155
अंशुमन मिश्र
27. नारी किसान होते हुए भी किसान नहीं 159
अरविन्द सुथार
28. धर्म में स्त्री की भूमिका और अस्मिता का प्रश्न 163
मुक्ति शर्मा
29. स्त्री जीवन और सामाजिक त्रासदी 168
उपमा शर्मा

Scanned with ACE Scanner

23

नारी के विविध रूप

डॉ. डिम्पल

पानं दुर्जनसंसर्गः पत्या च विरोहऽप्यनम्।
स्वननोऽन्यागृहवासत्र नारीसन्दूषणानिषट्।। (मनुस्मृति : 9.13)

इस श्लोक में बताया गया है कि स्त्री को अपने पति के साथ शान्तिपूर्वक रहना चाहिए, उसे सास–ससुर, बड़े बुजुर्गों, देवी–देवताओं और अतिथियों के प्रति आदर–भाव चाहिए। उसे घर–गृहस्थी की सामग्री को संभाल कर रखनी चाहिए। अपने धन को बचा कर रखने की आदत डालनी चाहिए, घर–गृहस्थी की सामग्री को संभाल कर रखना चाहिए, घर रीति–रिवाज का पालन करना चाहिए, स्त्री को कभी अंजान व्यक्ति के घर नहीं रहना चाहिए उसे खिड़की दरवाजे से झांकना नहीं चाहिए और अपनी इच्छा कोई काम नहीं करना चाहिए।

नारी के अस्तित्व की समाज के प्रत्येक काल में उपेक्षा की गई, उसे स्वतंत्र रहने से हमेशा रोका जाता। मध्यकाल में स्त्रियों की प्रस्थिति अनेक प्रतिबंधों के लगाने के कारण निम्न हो गई थी। पूर्व–यौवनारम्भ काल में ही विवाह होने लगे, विधवा पुनर्विवाह निषिद्ध हो गया, पति को पत्नी के लिए देवता का दर्जा दिया गया परन्तु नारी को महज एक शरीर में परिवर्तित कर दिया गया और उस पर संपूर्ण अधिकार कर लिया। नारी चाहे सर्वगुण संपन्न और चरित्रवा नही क्यों न हो फिर भी लोगों के द्वारा एक बार लांच्छन लगा दी जाए तो पति उसका त्याग कर देता है। रामायण में इसका एक उदाहरण मिजता है अहल्या के रूप में और यदि पति का पराई स्त्री को प्राप्त करने की इच्छा जागृत हो लाए तो फिर पत्नी पति को परमेश्वर मानती है इसका उदाहरण रावण और मंदोदरी के रूप में लिया जा सकता है। प्राचीन समय से लेकर 21वीं शताब्दी में औरत के अनेक रूप देखने को मिलते है। भारतीय ध र्म ग्रंथें और समाज में नारी के विविध रूप विकसित हुए है। जैसे रूसामाजिक एवं धार्मिक दृष्टि से : माता : कौशल्या, कैकेई, यशोदा, कुन्ती आदि।
पत्नी : रुक्मिणी, सीता, पार्वती, लक्ष्मी, द्रौपदी आदि।

Scanned with ACE Scanner